भाषा | साहित्य | संस्कृति

प्रश्नकाल

योजना
काग़ज पर जो बनाई जाती है
वह जमीन पर उतरते हुए
कुछ और हो जाती है
जैसे मनुष्य के हित में
शुरू हुआ कार्यक्रम
कब मनुष्य विरोधी हो जाता है
इसका एहसास तक नहीं होता।

- शंकरानंद

वर्ष:01, अंक:11, फरवरी 2025

9 789334 217506

आवरण- बंशीलाल परमार

संपादक: आलोक रंजन

भाषा | साहित्य | संस्कृति

प्रश्नचिह्न

फरवरी 2025 । ग्यारहवां अंक

प्रबंध सम्पादकः
प्रवीन कुमार 'प्रणय'

प्रबंध सहयोगः
पीयूष पुष्पम

सम्पादक
आलोक रंजन

आवरणः बंशीलाल परमार
रेखांकनः दीया शर्मा

अक्षर संयोजन
अदिति झा

प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं का सर्वाधिकार रचनाकारों के अधीन सुरक्षित है। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्य लेखकों के अपने हैं। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं के लिए एस जी एस एच प्रकाशन, मुम्बई का सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही प्रकाशन इसके लिए उत्तरदायी है।

वार्षिक मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	600.00 रुपये
संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिए-	1500.00 रुपये
विदेशों में-	$25

एक प्रति का मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	50.00 रुपये
संस्थाओं के लिए-	100.00 रुपये
विदेशों में-	$10

विज्ञापन दरें :

बाहरी कवर-	20,000.00 रुपये
अन्दर कवर-	15,000.00 रुपये
अन्दर पूरा पृष्ठ-	10,000.00 रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ-	7,000.00 रुपये

संपादकीय कार्यालयः

8/54 - ए, प्रथम तल, डबल स्टोरी,
विजय नगर, दिल्ली - 110009
मोबाइल : 9155113056

ई-मेल: prashanchinha.patrika@gmail.com
alokranjanoffice@gmail.com

वेबसाईट: https://prashanchinhapatrika.blogspot.com

फेसबुक: https://www.facebook.com/prasnacihnapatrika

इंस्टाग्राम: https://www.instagram.com/prashanchinha.patrika

अनुक्रम

संपादकीय

कविताएँ

शंकरानंद, डॉ निर्मल, वीरेन्द्र नारायण झा
ट्विंकल तोमर सिंह, वेद प्रकाश तिवारी

कहानियाँ

हरिंदर राणावत
राजा सिंह

आलेख

डॉ. अमल सिंह ' भिक्षुक '
सीताराम गुप्ता

विविध

रेखा शाह आरबी
अलका शर्मा

भूखे रहिए और मुर्ख रहिए

एप्पल के संस्थापक स्टीव जॉब्स स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के अपने भाषण के अंत में कहते हैं कि भूखे रहिए और मुर्ख रहिए। आज दुनिया में हर कोई अपने पेट पूजा के लिए संस्था, समाज और सरकार को पूजता है। ऐसे में कोई भूखे नहीं मरना चाहता है। सच बात तो यह है कि कोई मरना नहीं चाहता है। वे लोग भी मरना नहीं चाहते जो स्वर्ग जाना चाहते हैं। सब जीना चाहते हैं हम बेवजह मुस्कुराना चाहते हैं सबकी अपनी अपनी चाहते हैं और हम उन्हीं चाहतों के गुलाम हुए जाते हैं। स्टीव अपनी बात को गति देकर कहते हैं भूखे यानी की आपके अंदर कुछ करने की भूख होनी चाहिए और मुर्ख रहो ताकि आप मुर्ख रह कर ही हम सीख सकते हैं।

मैं जानना चाहता हूं कि आज के समय में कौन मुर्ख बने रहना चाहता है। इस प्रश्न का उत्तर काफी नकारात्मक हो सकता है। सब चालक और तेज होना चाहते हैं। आज की दुनिया में हर चीज़ कॉपी हो रहा है फर्स्ट और सेकेंड कॉपी तक बात चली गई है लोग बनावटी के इंसान बनने के दौड़ में हैं और उनके बाल बच्चों की एक लंबी कतार रील जैसी दर्दनाक बीमारी से जुझ रही हैं। आज के रेडीमेड संसार में हम सिला हुआ पैंट, शर्ट पहनकर अपने आप को असहज महसूस कर लेते हैं। हम कभी-कभी भाषा, सभ्यता और संस्कृति को लेकर शिकार हो जाते हैं। इस समाज में हमे कितना मुर्ख होना है यह हमे तय करना होगा। आज हर एक कॉल से पहले हमे सचेत किया जा रहा है कि हमारे साथ गलत हो सकता है। इसका मतलब साफ है कि और लोगों के साथ गलत हो रहा है। आज समय यह है की हम गलत को गलत नहीं कह पाते हैं अगर कहेंगे तो जान को खतरा है और घुमा फिरा के फिर वही बात कोई मरना नहीं चाहता...स्वर्ग के लिए भी नहीं।

आपका-

आलोक रंजन

alokranjanoffice@gmail.com

योजना

कागज़ पर जो बनाई जाती है
वह जमीन पर उतरते हुए
कुछ और हो जाती है
जैसे मनुष्य के हित में
शुरू हुआ कार्यक्रम
कब मनुष्य विरोधी हो जाता है
इसका एहसास तक नहीं होता

जलता हुआ जंगल
एक दिन वसंत को राख कर देता है
सूखती हुई नदी
विलुप्त हो जाती है
ढहते हुए पहाड़
गेंद की तरह लुढ़कने लगते हैं

इस तरह एक नयी श्रृंखला
तैयार होती है और
अच्छा भला शहर
एक दिन हरसूद होकर डूब जाता है!

शंकरानंद

सम्पर्क: क्रांति भवन,कृष्णा नगर,
खगरिया- 851204
ईमेल:
shankaranand530@gmail.com

जोशीमठ

इन दिनों बहुत चर्चा में है जोशीमठ
उसके दरकते हुए
पहाड़ का रक्त कौन देखता है
कोई नहीं
कोई नहीं चाहता कि
ऊँगली उसकी तरफ उठे

ये हादसा एक दिन में नहीं हुआ
एक दिन में खोखला नहीं हो गया पहाड़
एक दिन में नहीं बहा
उसके नीचे का हजारों लीटर पानी

वहां रहने वाले लोग अब कहाँ जाएंगे
कोई नहीं जानता
कर्ज लेकर घर बनाना और
उसे दरकते हुए देखना
आसान नहीं होता

आज दुनिया देख रही है
वहां की हर तस्वीर
पत्थर में पड़ने वाली दरार
कलेजे में कब पड़ जाती है
ये वही जानता है
जिसका घर माचिस की
तीली की तरह बिखर रहा है